

विद्यस्य निस्त्यखजनकस्य महासूखस्य न त्वाजीवंरु
वक्रुयनमालिखक ॥ येनमृगनं ॥ लक्ष्मीधनका
जनयवैनारुवक्तुः ॥ लक्ष्मीकनार्थं निमिर्नयहीनं
वृद्धाविद्वद्धावजयकुनिर्णः ॥ कमजीनंरुवक्रुयन
मालिखक ॥ धननयनं ॥ अलिखक महावज्रकुं धारु
कनमस्तुगं ॥ ददासि सर्ववृद्धा ना निहृक्कावचसंरु

PINDARIVYAVIDHI

वं ॥ यूष्मन्मा ॥ ॐ आर्यवेवाच नाय आदि ॥ ॐ य
॥ गमा मा रु हा न क स या आदि यूष्मन्मा ॥ ॐ न न्दा
य स्वा हा ॥ ॐ रु डा य स्वा हा ॥ ॐ ज या य स्वा हा ॥ ॐ मी
म्या य स्वा हा ॥ ॐ क पि ना य स्वा हा ॥ ॐ स न ही य स्वा हा ॥ य
के ॥ गमा मा रु हा न म ४ स्वा हा ॥ धन ॥ धन म रु या रु ॥
स्वानुवा य ॥ अथ मा अग्नि द व ना य या आ दि यूष्मन्मा
॥ ॐ मा नि रु डा य स्वा हा ॥ ॐ यू र्नु रु डा य स्वा हा ॥

ॐ धन न्दा य स्वा हा ॥ वैश्वना या व ऊ य यूष्मन्मा
स्वा हा ॥ ॥ धन यू जा स्व र्क ॥ ॐ दं क ये न म गी न्धं
वि स ह्वा न रु ल्य नः द दा मि ये न म रु क्वा य मि ष्ट
ऊं ऊ था म्भ र्वं ॥ सिं ध न ॥ वं लु नं सि न्द न नं यू र्नु
य वि रं या य ना स नः आ य दा रु नं क नि र्वाः ल की
मि ष्ट मि स र्वे दा ॥ ऊं ऊ म ॥ अ य न्क य न म व र्कः स

हसां ऊजि कं रथाः यथा यवीर वासं चः ददा मि
 यजमं यदा ॥ खान ॥ मान कि माध विजा मि मं युज
 चम्य कादिहिः ०० आ वि यु य सं श्रु कंः आह ना
 ययु य मानि का ॥ नैव अ ॥ नैव य स र्व सं श्रु कंः खा
 अला अ समनि कंः वलु गन्ध न ॥ अयु नः ददा मि
 यकि नृ कृ नां ॥ धनि वा का य ॥ उद धि वि र क के न

यय स्वा हा ॥ हन हन ॥ नक्का ह नाम धू क के टि छि
 सि कादिः दा छि म्य क ॥ क रु ना ध द लु धा वानः
 ता न ग ना ल म धू क्ता न स र्व य न नः ना या न क छि ह
 न क लु कि ना दि मु छि ॥ य क्ता न ॥ ता न न मा य द धि
 ख सि म या वि का नः स या अ न य र्व न स य न स य न
 ॥ अ धू म य नी वि वि ध नि मि ० ला व का दिः सं या क

नक्का ह नाम धू क के टि छि
 सि कादिः दा छि म्य क ॥ क रु ना ध द लु धा वानः
 ता न ग ना ल म धू क्ता न स र्व य न नः ना या न क छि ह
 न क लु कि ना दि मु छि ॥ य क्ता न ॥ ता न न मा य द धि
 ख सि म या वि का नः स या अ न य र्व न स य न स य न
 ॥ अ धू म य नी वि वि ध नि मि ० ला व का दिः सं या क

यत्र विधिनयसाधितानं ॥ धृति ॥ कयूचवचुनं
गालं कर्कममगनाशवः सीनरुखलुनिष्ठासः
धृतिरद्यानकत्यनं ॥ मरु ॥ दीयार्थसकखीरं
दीवाकालाकमपुलः शायामियसंसाकं ॥ स
वृक्षानंयसिद्धया ॥ नाय ॥ यधमो हुरुय ॥
हुरुमो नथगतः हवनसखाचमो निधुं ॥

चवंवादिमहासनवनं ॥ लुकि ॥ विधुं सर्वसंक
लः लावालावविवक्तिनः ॥ कसिंहनमसायि ॥
शुक्लकिर्तिनिर्माणं ॥ १ ॥ यसिद्धिग्यम
श्रीः सर्वसंयक्तिदायकः नन्दाहडायासोम्याक
विनायनमालुके ॥ २ ॥ लुंजसंवजनिजामः वेद्य
वर्तुमहाजालः वेद्यननामहवन्दः सर्वसंयक्ति

दायकं ॥ अथ गन्धर्वसर्वविधियनियुक्तं नमस्तु ॥
 ॥ ॐ ॥ धनयुक्तं विना स्थापनं ॥ कृष्णसनवाक्यं ॥
 आदिः यथा गन्धर्वसर्वविधियनियुक्तं नमस्तु ॥
 नामध्याययुक्तं विना कृष्णसनमयधिसिद्धिं ॥
 यिनामहं नमस्तु नामध्याययुक्तं विना कृष्णसनमयधिसिद्धिं ॥
 स्वयिनामहं नमस्तु नामध्याययुक्तं विना

॥ ४ ॥

का कृष्णसनमयधिसिद्धिं ॥ • ॥ किनादक ॥ उं कि
 नादकयि लुप्तं स्वध्या ॥ इति ॥ उं कर्क निरवाच नि
 शिवाच निरवाच किदं सर्वं कर्मावचनं कर्माव
 नियमस्य ॥ यथा नमस्तु ॥ उं स किनाय सर्वं लुप्तं
 ससादकाय स इति स दधि स दधु स दधु स दधु स दधु
 यकनन सहिनाय स्वध्या ॥ लं स्व ॥ उं य ॥ लुप्तं

उं सर्वपापविनासाय नमो

हाय ॐ अयनिमगय ॐ रक्षा न सं ला वा य विम
धर्म ल ग ग न स मु ग र्ग स ला व वि सु र्द महा न य मि
वा ने स्व धा ॥ म म मां स ॥ ॐ सर्व वि ल स मां स दा
न या न मि ला य जा म सा स मु ड र न स स म य स्व धा ॥
ॐ अ मि ला ला य ज म रु र अ म ना रु वः अ म रु स रु
वः अ म रु वि ला न क म न स र्व क सा व न न रु स क

निय स्व धा ॥ धन व न ॥ ॐ सर्व वि ल स वा या य वि ल म
धन महा व जा रु व र्द न व न या न मि य जा म य
स मु ड र न न स म य स्व धा ॥ सिं ध न ॥ ॐ सर्व वि ल स
न य न मि य जा म सा स मु ड र न न स म य स्व धा ॥
ज ज म ॥ ॐ सर्व वि रु य ला य दी रु व ला र्द का न व रु
मी ल या न मि ला य जा म सा स मु ड र न न स म य स्व धा ॥

॥ स्नान ॥ ॐ सर्वविघ्नो यो ना जाययुष्यस्य ह्य
नुमि नायुजामेद्यसमूहसू न न समय स्वधा ॥ नैवाय ॥
ॐ सर्वविघ्नो नैवाय कानया न मियुजामेद्यसमूहसू न न
समय स्वधा ॥ धनि वा ॥ ॐ दधि विरक्त कर्नेय्य स्वधा ॥
॥ इन इन ॥ लंलाह नायादि ॥ माध्व ॥ स्नान नमार्थ्या
दि ॥ धूय ॥ ॐ धर्म र धूय च न धूय स्नान या न मि नायु

जामेद्यसमूहसू न न समय स्वधा ॥ मरु ॥ ॐ सर्वविघ्नो
लेर का लय र दीय च निधि या न मि नायुजामेद्यसमूह
सू न न समय स्वधा ॥ माय ॥ ॐ सर्वविघ्नो यो ना जाय का
नाय स्नान या न मि नायुजामेद्यसमूहसू न न समय स्व
धा ॥ लुमि ॥ ॐ धर्म र मू ॥ ॐ मू न र म हा मू न स वे उ
म मि य नि ॥ धन ना जाय र म ध ग ना या ह न स म्य क
द द्याय ॥ न अ थ ॐ ॥ धन र वि ॥ धन र स वे या य वि

ॐ धनं सर्वकर्मायन न कर्तव्यं कविय स्वधा ॥ सुमि ॥ वि
धुतं सर्वसंकल्पयादि ॥ अथ ॥ ० ॥ धनं विदुषा न
कृष्णसन् ॥ ॥ कृष्णं न आनर्कं ॥ वाक् ॥ अथादि ॥
यथं न कथं गमायादि ॥ अथ विनामरु ॥ अथि तीम
रु ॥ अथि ती अमुक नाम ध्याय कृष्णसन् मूयिहि
ता ॥ कृष्णसन् ॥ इना ॥ न स्व न हाय ॥ न न ॥ स्वान
न ॥ कर्तन क ॥ नै न मा वृ हाय ॥ न मा धर्माय ॥ न मा स

घाय ॥ धायक ॥ ॥ धनं विदुषा न कर्क ॥ अथा
दि ॥ अथ न कर्क न मा सा पूर्व वाधिस त्व च र्या च
न रि ॥ अथि स त्व रु म व र्क ॥ मा ना यि नृ य दृ ग म र्य
स फ य नृ य त्व स क नि क र्य ॥ य ष्म ना वि धा नार्थ का र्य
य ॥ य ॥ य ॥ न क दि व र्क ॥ अ स्म रु धायक ॥ ॥ अ
मान स्य ॥ व र्क सां व त्व न वि त्व दे र्क का म नार्थ ॥ य ष्म

नमो भगवते वासुदेवाय
६ नमो

आ ०४ भाग ०३

२३६

१

नायि^{ना} अमकनामध्यायः यं नमः न नुनाम
निनामवर्तुसन्धकाः सद्यः नाममधुसमासाः स
इत्यासदधिसखी सुसंवायकननसहिनायः कलसि
नावैतिः अयि सुददस्यामिः सयुषाः धूयदीयगन्ध
नीयथादि संशुक्तः ऊजमानस्य यथसांवक्तुविधि
लुप्तसंधा ॥ ॥ अयिनामहममकनात्मनन

विश्वसंधा ॥ अयिनामह ॥ अयिनामह ॥
निनादकः ३३ : यक्षमनः वंशः मद्यमांसः का
युजाउर्था ॥ चतः सिधनः ऊजमः नंकनाऊर्तिना
ऊः खानः नीयथः दनद्वनः माध्याः धविथाः धूः
मनः नाय ॥ सुनि ॥ विधुनंथादि ॥ अह ॥ ऊदीय
मानमूनसंकल्पसिद्धिनेरु ॥ • ॥ धनविकनक

मम सन ॥ अथादि x यथा क मथा ग x आदि x ॥ ५ ॥
धन विकचयि सुजा न क म ॥ ० ॥ अथा x ॥ यथा
मरु क न जा गः अयु जा य च वा न्ध वाः आ ला गी का
वि नू पा चः हा ना हा न क न म मः त मी द न न यु काः
का का सा का क यि लुः स्या ना स्या स्या न यि लुः वि क
च यि लु न स्य स्व धा ॥ उ थ यि जा का य वि धि उ थ ॥

मुनि ॥ मरु त्वा मरु म हा धी वाः मरु त्वा मरु य ना य न
आ ला य स्य क न य नः वृ ह ल्य पु न मा मि ह ॥ न न या
मि डि क यो नि थः वृ न द वा गु ना य का उ ल्य न रु
व का ना नः य वृ ह ल्य पु न मा मि ह ॥ ६ ॥ अथा x ॥
उ दि य मा x ॥ अथा आ च म न स नि क स्व धा ॥ वृ गु नि
ना या व का व ना स न ॥ ना हा न सि च क ॥ कि क य जा या
र धा क नि धि य ॥

२ जित्स्नानादिनस्नानमासाद्याय
वक्त॥ नाहो ध्यायक॥ आगनावाधियक॥ ॥
स्नानकन॥ युत्रयूजाः दक्षिण॥ आसिवाद॥ कमाय
न॥ विसर्जन॥ ॥ कृष्णन॥ ध्यायववाक्य॥ ॥ या
वैकसर्वसत्त्वात्तः अष्टुजावाक्यान्त्रुजाः संलग्ना
वाः उययाउकावाः नृयिनावाः अत्रयिनावाः सं
क्षिनावाः असहिनावाः सर्वेनेमया मूडा स्नाययि

त्वाः उय अरमहायडा सुखावती गच्छु सुध ॥
यिष्टुहायसुक्तिवाक्यन॥ ॥ ध्यायसंन॥ ध्यायक
न॥ उधमर॥ मरकन॥ उत्र नरवत्तकिन
नत्वावननविष्मधनः कृग किमार्गविगच्छुक्ति
अगकिमा गच्छुडमर्थिन् ॥ ॥ यिष्टुका यना यावा
नयिर्न॥ ॥ वरधनवधसुवाक्ययुत्रुडावनरुय
दुयक॥ यक्षिमध्यावसुड्याकक॥ गनननके ॥ ॥

[illegible]

१ वृधममासयि शु सुधा ५
 २ द्वितीयमासयि शु २
 ३ तृतीयमासयि शु ३
 ४ चतुर्थमासयि शु ४
 ५ पंचममासयि शु ५
 ६ षष्ठमासयि शु ६
 ७ सप्तमासयि शु ७
 ८ अष्टमासयि शु ८
 ९ नवमासयि शु ९
 १० दशमासयि शु १०
 ११ एकादशमास शु ११
 १२ द्वादशमासयि शु १२
 १३ मसमासयि शु १३
 १४ पक्षमासयि शु १४
 १५ संक्रान्तिमासयि शु १५
 १६ अष्टमवर्षके मासयि शु १६
 १७ अष्टमवर्षके मासयि शु १७

१ हा निदस निमिः विंलुन थयत तातः किडायासुः
 शय्याग कालनः द्या तात यनर यद यया सिद्धं
 बाधय केयात कननः लनसूतावाः ॥ सुयि
 तातः ॥ उव यितासुः यितासुः ॥ जिउवातुयाः
 उनिदिय कातनः मखनावाः कालनः लुग थन
 निः पंच थयितः ॥ उवाहानयाः कातनः पंच थयितः

सत थागनयाः कालनः सतमनिः ॥ नायक जि
 स्तयाः कातनः ॥

॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

